हिन्दी समाचार पत्रों का उदय और विकास

जगदीप कुमार

शोध प्रारूप

हिंदी पत्रकारिता का प्रारंभिक काल हिंदी पत्रकारिता के उद्‌भव की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है। यह तथ्य सही है कि हिंदी पत्रकारिता का बीज सर्वप्रथम बंगाल में प्रस्फूटित हुआ। इनकी हिंदी के प्रति प्रेम की भावना ने ही 'उदंत मार्तण्ड' के प्रकाशन का मार्ग प्रशस्त कर दिया। हिन्दी पत्रकारिता की शुरुआत बंगाल से हुई। इसका श्रेय राजा राममोहन राय को दिया जाता है। राजा राममोहन राय ने ही सबसे पहले प्रेस को सामाजिक उद्देश्य से जोड़ा। भारतीयों के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक हितों का समर्थन किया। समाज में व्याप्त अंधविश्वास और कुरीतियों पर उन्होंने प्रहार किया। अपने पत्रों के जरिए जनता में जागरूकता पैदा की। राममोहन राय ने कई पत्र शुरू किये। बंगाल गजट भारतीय भाषा का पहला समाचार पत्र है। इस समाचार पत्र के संपादक गंगाधर भट्टाचार्य थे। इसके अलावा राजा राममोहन राय ने मिरातुल, संवाद कौमुदी, बंगाल हैराल्ड पत्र भी निकाला और लोगों में चेतना फैलाई। भारतीय पत्रकारिता की जननी बंगाल की धरती ही है। हिंदी पत्रकारिता का जन्म और विकास भी बंगाल की धरती में ही हुआ। भारतीय भाषाओं में पत्रों के प्रकाशन होने के साथ ही भारत में पत्रकारिता की नींव सुदृढ़ बनी थी। इसी बीच हिंदी पत्रकारिता का भी उदय हुआ। भारत में समाचार पत्रों के प्रकाशन का श्रीगणेश अभिव्यक्ति की आजादी की उमंगवाले विदेशी उदारवादियों ने किया। इसके पूर्व ही पश्चिमी देशों तथा यूरोपीय देशों में पत्रकाखिा की महत्ता को स्वीकारा गया था। हिक्की या बंकिघम के आरंभिक साहसपूर्ण प्रयासों से भारत में पत्रकारिता की नींव पड़ी थी। शिलालेखों, मौखिक आदि रूपों में सूचना संप्रेषण का दौर बहुत पहले शुरू हुआ था, पर आधुनिक अर्थोंमें पत्रकारिता का उदय औपनिवेशिक शासन के दौरान ही हुआ। अंग्रेजी शिक्षा की पृष्ठभूमि पर ही जेम्स अगस्टस हिकी के आरंभिक प्रयास 'हिकीज बंगाल गजट' अथवा 'कलकत्ता जेनरल अडवर्टैजर' के रूप में फलीभूत हुआ था। भारतीय विचारधारा और दर्शन के मर्मज्ञ विद्वान होने के साथ-साथ प्राचीन-नवीन सम्मिश्रण के एक विशिष्ट व्यक्तित्व के रूप में उभरकर उन्होंने एक स्वस्थ परंपरा का सूत्रपात किया। भारतीय परिवेश में आधुनिक आध्यात्मिकता का स्वर भरने वाले रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, रवींद्रनाथ ठाकुर, श्री अरविंद आदि मनीषियों से भारतीय सांस्कृतिक आंदोलन के रूप में जनजाग्रृति और संप्रेषण माध्यम रूपी पत्रकारिता का उदय हुआ था ।

शब्द कुंजी : हिंदी, पत्रकारिता, भाषाई पत्रकारिता, साहित्य,समाचार पत्र।

साहित्य पुनरावलोकन

डॉ० विष्णु पंकज ने पत्रकारिता का सुबोध इतिहास में इसका उल्लेख किया है। उनके अनुसार, ''भारत में छापेखाने की शुरुआत अंग्रेजों के आगमन से पहले हो गयी थी। यह सन 1557 में गोवा में स्थापित किया गया था। दूसरा तमिलनाडू में शुरू हुआ था तीसरा प्रेस मालाबार में लगाया गया। इसके बाद कई अन्य प्रेस भी स्थापित किये गये। इन प्रेसों में इसाई साहित्य ही प्रकाशित किया गया। इसके बाद भारतीयों ने भी प्रेस स्थापित करना शुरू कर दिया। 1662 में भीम जी पारिख ने मुंबई में प्रेस स्थापित किया। अंग्रेजी प्रेस मुंबई 1674 और मद्रास 1772 में शुरू हुआ। अपने शोध ग्रंथ में डॉ० रामरतन भटनागर ने उसके प्रकाशन को संदिग्ध माना है। श्बंगदूत' के बंद होने के बाद 15 सालों तक हिंदी में कोई पत्र न निकला।

पत्रकारिता के उद्‌भव की स्थितियों एवं कारणों का वर्णन करते हुए डॉ० लक्ष्मीकांत पाण्डेय ने लिखा है

पनसलवा, बेलदाउर, खगड़िया

ट्ट पत्रकारिता किसी भाषा एवं साहित्य की ऐसी इंद्रधनुषी विधा है, जिसमें नाना रंगों का प्रयोग होने पर भी सामंजस्य बना रहता है। पत्रकारिता,जहाँ एक ओर समाज के प्रत्येक स्पंदन की माप है, वहीं विकृतियों की प्रस्तोता, आदर्श एवं सुधार के लिए सहज उपचार। पत्रकारिता जहाँ किसी समाज की जागृति का पर्याय है, वहीं उसमें उठ रही ज्वालामुखियों का अविरल प्रवाह उसकी चेतना का प्रतीक भी है। डॉ० अवधेश कुमार हिंदी की साहित्य पत्रकारिता में कहते हैं कि भारत में सन 1556 में पुर्तगालियों के माध्यम से प्रेस का प्रयोग आरंभ किया गया, जिसे सर्वप्रथम गोवा में स्थापित किया गया। सन 1557 में भारत में सर्वप्रथम 'ट्राक त्रिनक्रिटामो' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई।

डा. सुशीला जोशी ''हिंदी पत्रकारिता विकास और विविध आयाम में कहती हैं कि बोल्ट्स के नोटिस के 12 वर्ष के बाद 29 जनवरी 1780 में अगस्ट हिकी ने इस कैलकटा जनरल एडवाइजर नामक पत्र की शुरुआत कर भारतीय पत्रकारिता की ऐतिहासिक नींव रखी। हिकी ने निर्भयता पूर्वक अपने पत्र में कंपनी के प्रशासन और भारत में बसे तत्कालीन अंग्रेज अधिकारियों के भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया। विभिन्न आरोप लगने के कारण हिकी पर संकटों का पहाड़ टूट पड़ा। उसके बाद आपत्तिजनक और खिल्ली उड़ानेवाले लेखों का परिणाम यह हुआ कि सरकार ने सबसे पहले पोस्ट आफिस में बंगाल गजट पर रोक लगा दी।

शोध आलेख

हिंदी पत्रकारिता के काल विभाजन को विद्वानों का एकमत नहीं है। हिंदी पत्रकारिता के उदय से लेकर वर्तमान काल तक वह विभिन्न दौर से गुजरी है। लगभग दो सौ वर्षों के इतिहास में हिंदी पत्रकारिता ने कई परिवेशों से संघर्ष किया। कई आयामों को पार किया है। हिंदी साहित्य की तरह विद्वानों ने हिंदी पत्रकारिता के इतिहास को भी कई कालखंडों में विभक्त किया है। सभी विद्वानों ने यह काल विभाजन और नामकरण अपने-अपने दृष्टिकोण से किया है।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हिंदी साहित्य के वृहत इतिहास के अनुसार हिंदी पत्रकारिता को तीन काल खंडों में विभक्त किया गया है।

प्रथम उत्थान सन 1826 से सन् 1867
द्वितीय उत्थान-सन् 1868 से 1920
आधुनिक काल- सन् 1920 के बाद।''

इसी तरह डॉ० रामचंद्र तिवारी ने अपने ग्रंथ 'पत्रकारिता के विविध रूप' में हिंदी पत्रकारिता का काल विभाजन पांच खंडों में किया है।

''उदय काल 1826 से 1867 तक
भारतेंदु काल 1867 से 1900 तक
तिलक या द्विवेदी युग 1900 से 1920 तक
गांधी युग 1920 से 1947 तक
स्वातंर्त्योत्तर युग 1947 के बाद''

डॉ० मदुला वर्मा ने इसे पांच भागों में बांटा है। हिंदी की सर्वोदय पत्रकारिता'शोध प्रबंध में उन्होंने इसका उल्लेख किया है।

''प्रारंभिक युग 1826 से 1867 तक
भारतेंदु युग 1868 से 1900 तक
द्विवेदी युग 1900 से 1920 तक
गांधी युग 1920 से 1947 तक
स्वातंर्त्येत्त युग 1947 से आज तक''

हिंदी पत्रकारिता के आलोचनात्मक इतिहास में डॉ० रमेश जैन ने जो काल विभाजन किया है, वह डॉ० मृदुला वर्मा के काल विभाजन से मिलता जुलता है। वहीं डॉ० रामअवतार शर्मा ने उद्‌गम काल से 1950 तक की पत्र-पत्रिकाओं के आधार पर पत्रकारिता के इतिहास को पांच खंडों में विभक्त किया है।

प्रारंभिक काल 1826 से 1867 तक
भारतेंदु काल (प्रयोग काल) 1868 से 1900 तक
द्विवेदी काल(निर्माण काल)1901 ई. से 1925 ई. तक
पूर्व स्वातंत्र काल(विकास काल)1926 ई से 1947 ई. तक
उत्तर स्वातंत्र काल (उत्कर्ष काल)-1948 से 1950 ई

इस प्रकार अलग-अलग विद्वानों के मतों को घ्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्याय में हिंदी पत्रकारिता के विकास को पाँच खंडों में विभक्त किया गया है-

हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव काल 1826 से 1867 ई. तक भारतेंदु कालीन हिंदी पाक्कारिता 1867 से 1900 ई. तक द्विवेदी कालीन पत्रकारिता 1900 से 1920 ई. तक स्वतंत्रतापूर्व हिंदी पत्रकारिता 1920 से 1947 ई. तक स्वातंत्र्योत्तर हिंदी पत्रकारिता 1947 से अब तक हिंदी पत्रकारिता का उद्‌भव काल 1826 से 1867 तक हिंदी पत्रकारिता का उद्‌भव काल रू 1826 से 1867।

कलकत्ता से 30 मई 1826 को श्उदन्त मार्तण्ड'के सम्पादन से प्रारंभ हिंदी पत्रकारिता की विकास यात्रा कहीं थमी और कहीं ठहरी नहीं है। पंडित युगल किशोर शुक्ल के संपादन में प्रकाशित इस समाचार पत्र ने हालांकि आर्थिक अभावों के कारण जल्द ही दम तोड़ दिया पर इसने हिंदी अखबारों के प्रकाशन का जो शुभारंभ किया वह कारवां निरंतर आगे बढ़ा है। साथ ही हिंदी का प्रथम पत्र होने के बावजूद यह भाषा, विचार एवं प्रस्तुति के लिहाज से महत्त्वपूर्ण बन गया। पत्रकारिता जगत् में कलकत्ता का बड़ा महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रशासनिक, वाणिज्य तथा शैक्षिक दृष्टि से कलकत्ता का उन दिनों विशेष महत्व था। यहीं से 10 मई 1829 को राजा राममोहन राय ने बंगदूत' समाचार पत्र निकाला जो बंगला, फारसी, अंग्रेजी तथा हिंदी में प्रकाशित हुआ। बंगला पत्र समाचार दर्पण'के 21 जून 1834 के अंक प्रजामित्र'नामक हिंदी पत्र के कलकत्ता से प्रकाशित होने की सूचना मिलती है।

हिंदी पत्रकारिता का उत्थान काल रू 1900-1947

सन 1900 का वर्ष हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में महत्त्वपूर्ण है। 1900 में प्रकाशित सरस्वती पत्रिका अपने समय की युगान्तरकारी पत्रिका रही है। वह अपनी छपाई, सफाई, कागज और चित्रों के कारण शीघ्र ही लोकप्रिय हो गई। इसे बंगाली बाबू चिन्तामणि घोष ने प्रकाशित किया था तथा इसे नागरी प्रचारिणी सभा का अनुमोदन प्राप्त था। इसके सम्पादक मण्डल में बाबू राधाकृष्ण दास बाबू कार्तिका प्रसाद खत्री, जगन्नाथदास रत्नाकर, किशोरीदास गोस्वामी तथा बाबू श्याम सुन्दर दास थे। 1903 में इसके सम्पादन का भार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी पर पड़ा। इसका मुख्य उद्देश्य हिंदी-रसिकों के मनोरंजन के साथ भाषा के सरस्वती भण्डार की अंगपुष्टि, वृद्धि और पूर्ति करन था। इस प्रकार 19वी शताब्दी में हिंदी पत्रकारिता का उद्‌भव व विकास बड़ी ही विषम परिस्थिति में हुआ। इस समय जो भी पत्र-पत्रिकाएं निकलती उनके सामने अनेक बधाएं आ जातीं लेकिन इन बाधाओं से टक्कर लेती हुई हिंदी पत्रकारिता शनैः-शनैः गति पाती गई।

हिंदी पत्रकारिता का उत्कर्ष काल 1947 से प्रारंभ

अपने क्रमिक विकास में हिंदी पत्रकारिता के उत्कर्ष का समय आजादी के बाद आया। 1947 में देश को आजादी मिली। लोगों में नई उत्सुकता का संचार हुआ। औद्योगिक विकास के साथ-साथ मुद्रण कला भी विकसित हुई। जिससे पत्रों का संगठन पक्ष सुखाढ़ हुआ। रूप-विन्यास में भी सुरुचि दिखाई देने लगी। आजादी के बाद पत्रकारिता के क्षेत्र में अपूर्व उन्नति होने पर भी यह दुःख का विषय है कि आज हिंदी पत्रकारिता विकृतियों से घिरकर स्वार्थसिद्धि और प्रचार का माध्यम बनती जा रही है। परन्तु, फिर भी यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि भारतीय प्रेस की प्रगति स्वतंत्रता के बाद ही हुई। यद्यपि स्वातंत्र्योत्तर पत्रकारिता ने पर्याप्त प्रगति कर ली है, किन्तु उसके उत्कर्षकारी विकास के मार्ग में आने वाली बाधाएँ भी कम नहीं हैं।

भारत के स्वाधीनता संघर्ष में पत्र-पत्रिकाओं की अहम भूमिका रही है। आजादी के आन्दोलन में भाग ले रहा हर आम-ओ-खास कलम की ताकत से वाकिफ था। राजा राममोहन राय, महात्मा गांधी, मौलाना अबुल कलाम आजाद, बाल गंगाधर तिलक, पंडित मदनमोहन मालवीय, बाबा साहब अम्बेडकर, यशपाल जैसे आला दर्जे के नेता सीधे-सीधे तौर पर पत्र-पत्रिकाओं से जुड़े हुए थे और नियमित लिख रहे थे। जिसका असर देश के दूर-सुदूर गांवों में रहने वाले देशवासियों पर पड़ रहा था। अंग्रेजी सरकार को इस बात का अहसास पहले से ही था, लिहाजा उसने शुरू से ही प्रेस के दमन की

नीति अपनाई। 30 मई 1826 को कलकत्ता से पंडित जुगल किशोर शुक्ल के संपादन में निकलने वाले उदंत्त मार्तण्ड' को हिंदी का पहला समाचार पत्र माना जाता है। अपने समय का यह खास समाचार पत्र था मगर आर्थिक परेशानियों के कारण यह जल्दी ही बंद हो गया। आगे चलकर माहौल बदला और जिस मकसद की खातिर पत्र शुरू किये गये थे, उनका विस्तार हुआ। नतीजतन उन्हें सत्ता का कोपभाजन बनना पड़ा। दमन-नियंत्रण के दुष्चक्र से गुजरते हुए उन्हें कई प्रेस अधिनियमों का सामना करना पड़ा। वर्तमान पत्र में पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा लिखा राजनीतिक भूकम्प' शीर्षक लेख, अभ्युदय'का भगत सिंह विशेषांक, किसान विशेषांक,'नया हिन्दुस्तान' के साम्राज्यवाद और पूंजीवाद विरोधी लेख 'स्वदेश'का विजय अंक के 1939 के सितम्बर-अक्टूबर अंक विप्लव'का चंद्रशेखर अंक अपने क्रांतिकारी तेवर और राजनीतिक चेतना फैलाने के इल्जाम में अंग्रेजी सरकार की टेढ़ी निगाह के शिकार हुए और उन्हें जब्ती, प्रतिबंध, जुर्माना एवं का सामना करना पड़ा।

भारतीय पत्रकारिता की स्वाधीनता को बाधित करने वाला पहला प्रेस अधिनियम गवर्नर जनरल वेलेजली के शासनकाल में 1799 को ही सामने आ गया था। भारतीय पत्रकारिता के आदिजनक जॉन्स आगस्टक हिक्की के समाचार पत्र 'हिक्की गजट' को विद्रोह के चलते सर्वप्रथम प्रतिबंध का सामना करना पड़ा। हिक्की को एक साल की कैद और दो हजार रूपए जुर्माने की सजा हुई। कालांतर में 1857 में गैंगिंक एक्ट,1878 में वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट,1908 में न्यूज पेपर्स एक्ट, इन्साइटमेंट अफपैंसेज, 1910 में इंडियन प्रेस एक्ट, 1930 में इंडियन प्रेस आर्डिनेंस, 1931 में दि इंडियन प्रेस एक्ट, इमरजेंसी पावर्स जैसे दमनकारी कानून अंग्रेजी सरकार द्वारा प्रेस की स्वतंत्रता को बाधित करने के उद्देश्य से लागू किए गये। अंग्रेजी सरकार इन काले कानूनों का सहारा लेकर किसी भी पत्र-पत्रिका पर चाहे जब प्रतिबंध-जुर्माना लगा देती थी। आपत्तिजनक लेख वाले पत्र-पत्रिकाओं को जब्त कर लिया जाता।

बीसवीं सदी के दूसरे-तीसरे दशक में सत्याग्रह, असहयोग आन्दोलन सविनय अवज्ञा आन्दोलन के प्रचार प्रसार और उन आन्दोलनों की कामयाबी में समाचार पत्रों की अहम भूमिका रही। कई पत्रें ने स्वाधीनता आन्दोलन में प्रवक्ता का रोल निभाया। कानपुर से 1920 में प्रकाशित वर्तमान' ने असहयोग आन्दोलन को अपना व्यापक समर्थन दिया था। पंडित मदनमोहन मालवीय द्वारा शुरू किया गया साप्ताहिक पत्र 'अभ्युदय' उग्र विचारधारा का हामी था। अभ्युदय के भगत सिंह विशेषांक में महात्मा गांधी, सरदार पटेल, मदनमोहन मालवीय, पंडित जवाहरलाल नेहरू के लेख प्रकाशित हुए। जिसके परिणामस्वरूप इन पत्रों को प्रतिबंध-जुर्माना का सामना करना पड़ा। गणेश शंकर विद्यार्थी का प्रताप सज्जाद जहीर एवं शिवदान सिंह चौहान के संपादन में इलाहाबाद से निकलने वाला नया हिन्दुस्तान ने अपने नाम के मुताबिक ही क्रांतिकारी तेवर वाले पत्र थे। इन पत्रों में क्रांतिकारी युगांतकारी लेखन ने अंग्रेजी सरकार की नींद उड़ा दी थी। फासीवाद के उदय और बढ़ते साम्राज्यवाद-पूंजीवाद पर चिंता इन पत्रों में साफ देखी जा सकती है। आचार्य चतुरसेन शास्त्री द्वारा संपादित चाँद'के फाँसी अंक की चर्चा भी जरूरी है। अंग्रेजी हुकूमत एक तरफ क्रांतिकारी पत्र-पत्रिकाओं को जब्त करती रही तो दूसरी तरफ इनके संपादक इन्हें बिना रुके पूरी निर्भीकता से निकालते रहे।

30 मई 1826 हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में उल्लेखनीय तिथि है जिस दिन सर्वथा मौलिक प्रथम हिंदी पत्र के रूप में 'उदंत मार्तंड' का उदय हुआ था। इसके संपादक और प्रकाशक कानपुर के जुगल किशोर ही थे। पंडित युगल किशोर शुक्ला जी कानपुर के चमनगंज के निकट प्रेम नगर के रहने वाले थे और कोलकाता (तत्कालीन कलकत्ता) के दीवानी न्यायालय में वकालत की प्रैक्टिस करते थे।

देश और हिंदी प्रेम की महत्वकांक्षा और ऊँचे आदर्श से पं. जुगल किशोर ने 'उदंत मार्तंड' का प्रकाशन आरंभ किया था, पर सरकारी सहयोग के

अभाव में, ग्राहकों की कमी आदि प्रतिकूल परिस्थितियों में 4 दिसंबर, 1827 को ही लगभग डेढ़ साल की आयु में हिंदी का प्रथम पत्र का अंत हो गया। समाचार पत्र को गैर हिंदी भाषी क्षेत्र होने की वजह से पाठक नहीं मिले और सरकार की दमनात्मक नीति ने डाक का उस समय जो पंजीयन होता वह नहीं होने दिया गया था। जिस संपादकीय उद्घोष के साथ समाप्त हुआ, वह आज भी हिंदी पत्रकारिता के संघर्षपूर्ण अस्तित्व के प्रतीकाक्षरों की पंक्तियों के रूप में उल्लेखनीय हैं।

निष्कर्ष:

भारत में अंग्रेजों के प्रयत्न से प्रेस की स्थापना हो गई थी। लेकिन प्रेस'पर नियंत्रण अंग्रेजों का ही रहा। उस समय अंग्रेजी शासकों के मन में भारतवासियों के लिए न तो आत्मीयता का भाव था और न ही कोई मानवीय संवेदना या सहानुभूति दिखायी देती थी। भारतीयों को सभी दृष्टि से आर्थिक शोषण का शिकार बनाया जा रहा था। इसलिए उन कठिन परिस्थितियों के दौर में मुक्ति पाने के लिए, राष्ट्रधर्म की रक्षा के लिए तथा भारतीय जनमानस में सुधारात्मक और नैतिक दृष्टि विकसित करने के उद्येश्य से भारतीय भाषाओं के साथ-साथ हिंदी पत्रकारिता का सहारा लिया। प्रेमचंद भारतीय पत्रकारिता की पृष्ठभूमि में अनेक सरकारी विरोध, दमन, शोषण और बलिदान के प्रसंग रहे हैं। इन स्थितियों को पार करती हुई भारतीय भाषाओं के सहारे पत्रकारिता ने चलना सीखा। कलकत्ते के जीवन में ही हिन्दी पत्रकारिता का विकास हुआ। पत्रकारिता एक ओर वैचारिक चिंतन का विराट फलक है, तो दूसरी ओर भावाकुलता एवं मानवीय संवेदना का अनाविल स्रोत। पत्रकारिता जनता एवं सत्ता के मध्य यदि सेतु है तो सत्ता के लिए अग्नि शिखा और जनता के लिए संजीवनी। अत: स्वाभाविक है कि पत्रकारिता का उदय उन्हीं परिस्थितियों में होता है, जब सत्ता एवं जनता के मध्य संवाद की स्थिति नहीं रहती या फिर जब जनता अंधेरे में और सत्ता बहरेपन के अभिनय में लीन रहती है। भारत में अंग्रेजो की दमनात्मक नीति के विरुद्ध आवाज के रूप में स्वाधीनता की प्रबल उमंग ने पत्रकारिता की नींव रखी। अपने आरंभिक काल में हिंदी पत्रकारिता आजादी प्राप्ति, समाज सुधार, जनजागरण का साधन मात्र थी लेकिन बाद में देश की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक दुर्व्यवस्था से मुक्ति पाने का जो जनमानस बनता गया, उसी से भारत में हिंदी पत्रकारिता का उद्भव व विकास होता गया। हिंदी पत्रकारिता का मुख्य स्वर राष्ट्रीयता एवं सार्वदेशिक रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. 10. मिश्र, कृष्ण बिहारी, 1968, हिंदी पत्रकारिता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 51
2. मिश्र, कृष्ण बिहारी, 1968, हिंदी पत्रकारिता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,नई दिल्ली।
3. श्रीधर, विजय दत्त, भारतीय पत्रकारिता कोश 1780-1900, खण्ड एक, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ-531
4. तिवारी, डा. रामचंद्र, आलेख प्रकाशन, पत्रकारिता के विविध रूप, नई दिल्ली, 1978, पृष्ठ 16
5. तिवारी, डा. रामचंद्र, आलेख प्रकाशन, पत्रकारिता के विविध रूप, नई दिल्ली, 1978, पृष्ठ 21
6. जोशी, रामशरण और हरिवंश, 2010, विकास का वैकल्पिक मीडिया माडल और बाजारवाद, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 88
7. तिवारी, डॉ० अर्जुन, 2014, संपूर्ण पत्रकारिता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
8. वर्मा, डॉ० मृदुला, हिंदी की सर्वोदय पत्रकारिता, विद्या प्रकाशन, कानपुर, पृष्ठ 39
9. शर्मा, डॉ० रामअवतार शर्मा, नमन प्रकाशन,नई दिल्ली, पत्रकारिता और साहित्य, पृष्ठ 51-52
10. वर्मा, डॉ० मृदुला, हिंदी की सर्वोदय पत्रकारिता, विद्या प्रकाशन, कानपुर, पृष्ठ 41